# डॉयबिटिक कीटोऐसिडोसिस

## टाईप-1 मधुमेह का एक जानलेवा विकार

- डॉ. सुशील जिन्दल

सात साल का दीपू दूसरी कक्षा में आ गया था। पिछले कुछ दिनों से वह बहुत कमजोर सा दिखने लगा था। उसे प्यास बार–बार लगती और पेशाब भी बार–बार जा रहा था। फिर एक दिन उसकी तबियत कुछ ज्यादा ही खराब हो गई। उसे पेट में दर्द और उल्टियाँ होने लगीं। पापा–मम्मी उसे पड़ोस के डॉक्टर के यहाँ ले गये। डॉक्टर ने कुछ दवाईयाँ दीं और खान–पान में हुई गड़बड़ी का हवाला दे उन्हें सांत्वना देते हुए वापस भेज दिया। पर शाम होते–होते दीपू की साँसें तेज चलने लगीं और उसे बेहोशी सी भी आने लगी। मम्मी–पापा घबरा कर उसे एक नर्सिंग होम ले गये। वहाँ पता चला कि दीपू को डॉयबिटीज (टाईप–1) हो गई है जिसके कारण वो डॉयबिटिक कीटो–ऐसोडोसिस में है। तीन दिन डॉक्टरों व नर्सों की कड़ी मेहनत से दीपू की जान बच पायी। अब वह नियमित रूप से रोज दो बार इंसुलिन का इंजेक्शन लगाता है और सामान्य जीवन जी रहा है।

आईये एक और उदाहरण देखें। अनन्या ग्यारह साल की प्यारी–सी बच्ची है। पिछले तीन साल से वह टाईप–1 डायबिटीज की मरीज है, खुद इंसुलिन का इंजेक्शन लेती है और खुद ग्लूकोमीटर से अपना ग्लूकोज़ भी चेक कर लेती है। अभी 14 नवम्बर को विश्व मधुमेह दिवस पर उसे पेंटिंग में प्रथम पुरुस्कार मिला था। एक दिन अनन्या को बुखार आ गया। कुछ सर्दी–जुकाम और गला भी खराब था। बुखार व गले में दर्द की वजह से वह कुछ भी खाने को तैयार नहीं थी। मम्मी ने जब जबरदस्ती कुछ खिलाने की कोशिश की तो उसे उल्टी हो गई। मम्मी–पापा ने यह सोच कर की बच्ची कुछ नहीं खा रही और इंसुलिन देने से लो शुगर हो जायेगी, इंसुलिन का इंजेक्शन रोक दिया। अगले ही दिन अनन्या को बहुत पेशाब और उल्टियाँ होने लगीं। उसकी जुबान सूख गयी। शाम तक वो बेहोश हो गई। अस्पताल ले जाने पर पता चला कि उसे डायबिटिक कीटोऐसिडोसिस की खतरनाक व जानलेवा स्थिति निर्मित हो गई है। अनन्या सात दिन अस्पताल में रही। उसे नस (Intravenous) में सेलाईन व इंसुलिन देना पड़ा। कुछ समय ऑक्सीजन भी देनी पड़ी, परंतु अंत में सब ठीक हो गया।

इन दोनों उदाहरणों में बच्चों में डॉयबिटिक कीटोऐसिडोसिस नामक खतरनाक परिस्थिति उत्पन्न हो गई थी। दीपू के केस में टाईप–1 डॉयबिटीज का पता ही Diabetic Keto-Acidosis (DKA) से चला। लगभग 20 प्रतिशत बच्चों में टाईप–1 डॉयबिटीज़ का पहली बार पता DKA की स्थिति से ही चलता है।

दूसरे उदाहरण में अनन्या के मम्मी–पापा ने इंसुलिन इसलिये रोक दी क्योंकि वह बीमार थी और खाना नहीं खा रही थी। दरअसल किसी भी बीमारी या तनाव (Stress) की अवस्था में शरीर में ऐसे हार्मोन्स बनने लगते हैं जो कि इन्सुलिन को काम नहीं करने देते या इंसुलिन के विरुद्ध काम करते हैं। ऐसी दशा में

*शेष पृष्ठ 25 पर.....*

..... पृष्ठ 19 से आगे

शरीर की इंसुलिन की जरूरत बढ़ जाती है।

आईये एक तीसरा उदाहरण देखें– एक और सत्यकथा। शर्मा दम्पत्ति का एकमात्र पुत्र सुधांशु आठ वर्ष का था। दुर्भाग्यवश सुधांशु को टाईप–1 डायबिटीज हो गई। शर्मा दम्पत्ति यह मानने के लिये

कतई तैयार नहीं थे कि उनके बेटे को जीवन भर इंसुलिन के इंजेक्शन लेने पड़ेंगे। वे इन सुईयों से किसी भी कीमत पर अपने बच्चे को बचाना चाहते थे। डॉक्टर के लाख समझाने पर भी वे यही समझते की बच्चा जल्द ठीक हो जायेगा और इंसुलिन तो कुछ दिन की बात है। वे इसके लिये कुछ भी करने व कहीं भी जाने को तैयार थे। वे दस लोगों के उदाहरण देते की फलाँ आदमी इंसुलिन ले रहा था, डॉक्टरों ने उसे कह जो दिया था पर वह अब छह माह से बिना इंसुलिन के भला चंगा है। वे टाईप–1 व टाईप–2 मधुमेह में अंतर को मानने को नहीं तैयार थे।

इसी बीच एक सुप्रसिद्ध योग बाबा का शिविर ग्वालियर में लगने वाला था। बाबा के मेडिकल चमत्कार वे रोज टी.वी. पर देखते थे। शर्मा दम्पत्ति को एक आशा का पुँज नजर आया। शर्माजी ने दो और टाईप–1 मधुमेही बच्चों के माता–पिता से संपर्क किया। उन्हें समझाया कि बाबा जरूर हमारे बच्चों की इंसुलिन छुड़वा देंगे। तीनों परिवारों ने शिविर में पंजीकरण के लिये 1800 रु. प्रति मरीज भिजवाये और निर्धारित तिथि को ग्वालियर पहुँच गये। बाबा से मुलाकात हुई। बाबा गरजे – ''इतने नन्हें–मुन्ने बच्चों को इंसुलिन? अरे इंसुलिन तो मधुमेह की लास्ट स्टेज पर दिया जाता है। आपके डॉक्टर इंसुलिन बनाने वाली बहु–राष्ट्रीय कम्पनियों के एजेंट हैं। बंद करवाईये इनकी इंसुलिन।'' बाबा ने माईक पर आवाज ऊँची कर कहा जिन लोगों की इंसुलिन हमारे योग व दवाई से बंद हो गई जरा हाथ तो उठायें। भरी भीड़ में दर्जन भर हाथ उठ गये। शर्मा दम्पत्ति ने बाबा के पैर पकड़ लिये।

बाबा के कथन से स्पष्ट था कि बाबा के पास इलाज तो सब बीमारियों का है परंतु उन्हें सब बीमारियों ज्ञान नहीं है। वे भी टाईप–1 व टाईप–2 डॉयबिटीज़ के अंतर को नहीं जानते थे। टाईप–1 डायबिटीज के बच्चों का जीवन बाहर से दी जाने वाली इंसुलिन पर निर्भर है। यह उन्हें नहीं मालूम था। बाबा ने 600 रु. की दवाईयाँ बच्चे को दीं। आगे दवाई मँगाने के लिये ड्राफ्ट भेजने का पता भी दिया।

शर्मा दम्पत्ति बेहद खुश–खुश ग्वालियर से लौटे। ट्रेन यात्रा के दौरान उन्होंने ऐलोपैथी के डॉक्टरों को जम कर कोसा। शर्मा जी ने इंसुलिन की शीशी व सुईयाँ चलती ट्रेन की खिड़की से बाहर फेंक दीं। दूसरे दोनों परिवार कुछ ज्यादा अनुभवी थे। उन्होंने भोपाल पहुँच कर ही आगे का निर्णय लेने की सोची। भोपाल आकर पहला दिन तो ठीक–ठाक निकल गया, परंतु दूसरे दिन से सुधांशु कुछ सुस्त व थका–थका लगा। उसे बार–बार पेशाब आने लगी और वह बार–बार पीने को पानी मांगने लगा। शर्मा दम्पत्ति ने इसे ज्यादा गम्भीरता से नहीं लिया और सोचा बाबा की दवाई का असर आने में कुछ और समय लगेगा। तीसरे दिन सुधांशु की हालत बिगड़ने लगी। उसे उल्टियाँ होने लगीं। साँस भी तेज चलने लगी और वो बेहोश हो गया।

शर्मा जी ने बाबा को सम्पर्क करने के लिये दसियों फोन लगाये पर सफलता न मिली। बच्चे की हालत बिगड़ती देख और मिसेज़ शर्मा की ज़िद के कारण आखिर शर्मा जी सुधांशु को अस्पताल ले गये। वहाँ जाकर उन्होंने नया नाटक खड़ा कर दिया। उनके बच्चे को इंसुलिन नहीं लगाई जाये। इसी ऊहापोह में कीमती समय बर्बाद हो गया। बमुश्किल मिसेज़ शर्मा को विश्वास में लेकर डॉक्टर सुधांशु का ईलाज शुरू कर पाये। परंतु तब तक देर हो चुकी थी। सुधांशु को

मिरगी जैसे दौरे आने लगे। इन दौरों के दौरान उल्टी में निकला पदार्थ उसके फेफड़ों में चला जाने से डॉक्टर सुधांशु को बचा न पाये। एक नन्हीं जान बाबाओं की अज्ञानता की भेंट चढ़ गई।

इस कहानी से सबक स्पष्ट है। सभी टाईप–1 मधुमेहियों के लिये इंसुलिन के सिवा कोई इलाज नहीं है। भविष्य में विज्ञान नये करिश्मे दिखायेगा परंतु अभी किसी के बहकावे में आकर आप इसुंलिन बंद करने की सोचे भी नहीं। डायबिटिक कीटोऐसिडोसिस एक जानलेवा गम्भीर अवस्था है, जिसका जल्दी उचित इलाज करवाना पड़ता है।

## क्या है डॉयबिटिक कीटोऐसिडोसिस?

शरीर में सभी अंगों को ऊर्जा की जरूरत होती है। यह ऊर्जा शरीर ग्लूकोज़ से प्राप्त करता है। ग्लूकोज़ को कोषिकाओं के अंदर जाने व उपयोग में लाने के लिये इंसुलिन की जरूरत होती है। यदि

इंसुलिन की लगभग पूर्ण कमी हो जाये या इंसुलिन की कार्यप्रणाली पूरी तरह खत्म हो जाये तो खून में ग्लूकोज़ की मात्रा बढ़ती ही जाती है और कोषिकाएँ इसका उपयोग नहीं कर पातीं। ऐसे में शरीर ऊर्जा के विकल्प ढूँढने लगता है। यह विकल्प है चरबी को गलाकर उससे निकले वसीय अम्लों का उपयोग। ऐसा करने पर शरीर में कीटोंस बनने लगते हैं जो खून में ऐसिड की मात्रा बढ़ा देते हैं। खून में ग्लूकोज़ अधिक होने से बहुत पेशाब आता है। ऐसिड बढ़ने से उल्टी होती है। पेशाब व उल्टियों से शरीर का पानी सूखने लगता है। ऐसिड बढ़ने से साँस भी फूलने लगती है।

## क्या डी.के.ए. टाईप-1 मधुमेह ही होता है?

अधिकांश रूप से यह टाईप–1 मधुमेह में ही होता है क्योंकि इन मरीजों में इंसुलिन अंदर से नहीं बनता। टाईप–2 मधुमेह में अत्यंत गम्भीर बीमारी, तनाव या स्टीराईड की दवायें देने पर यह स्थिति आ सकती है।

## डी.के.ए. के लक्षण क्या हैं?

- अत्यधिक पेशाब आना या प्यास लगना।
- मुँह सूखना, अत्यधिक थकावट लगना, सुस्ती आना।
- साँसों में बासे फल की गंध आना।
- पेट दर्द और उल्टियाँ होना।
- साँस तेज़ चलना।
- बेहोशी आना।

## कैसे निदान करते हैं?

- खून में ग्लूकोज़ की मात्रा 250–600 तक।
- पेशाब में एसिटोन बड़ी मात्रा में।
- खून में ऐसिडिटी (Arterial Blood Gas) में।

## क्या कारण हैं डी.के.ए. के?

- इंसुलिन का इंजेक्शन बंद कर देना।
- टाईप–1 मधुमेह का पहला वाकया।
- शरीर में गम्भीर संक्रमण (Infection) आदि।
- लगातार हर घंटे सभी जाँचें की।

## कैसे करते हैं ईलाज?

- तुरंत अस्पताल में भर्ती करें
- नस से सलाईन तेजी से
- नस से इंसुलिन
- लगातार हर घंटे खून, पेशाब की जाँचें
- शरीर में Infection पर नियंत्रण

## कितना गम्भीर है डी.के.ए.?

- यह एक गम्भीर विकार है। जिस तरह टाईप–2 मधुमेह में हार्ट–अटैक होता है, उसी तरह की गम्भीर स्थिति टाईप–1 मधुमेह में D.K.A. से होती है।
- लगभग 10प्र. मरीज़ DKA में अपनी जान खो देते हैं।
- शीघ्र निदान एवं उपचार अत्यंत आवश्यक है।

## कैसे बचें?

- इंसुलिन बंद न करें।
- बीमारी की अवस्था में खून में बार–बार ग्लूकोज़ की जाँच करें और डॉक्टर की सलाह से ही इंसुलिन कम या ज्यादा करें।
- खून में ग्लूकोज़ 250 मि.ग्रा. से अधिक हो तो पेशाब में ऐसिटोन देखें। यदि यह पाज़िटिव है तो डॉक्टर से सम्पर्क करें।
- पेट दर्द–उल्टी को गम्भीरता से लें।